त्रैमासिक पत्रिका 2020

अनमोल रिश्ता

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय

गुड़वा, सीतागढ़, हजारीबाग (झारखंड)

पंचम संस्करण

TEACHING STAFF

EDITORIAL BOARD

STUDENT EDITORIAL TEAM

HAZARIBAG CATHOLIC DIOCESE

Bishop's House, Diocesan Training Centre, Julu Park, P.B. No. 14, Hazaribag-825 301, Jharkhand, India
Phone : (Office) 06546-222340, Personal & Fax : 06546-226820, Mobile : 09199069192, 07488194209
E-mail : (Office) hzbhcdhaz@gmail.com, (Personal) bishopanandjojo@gmail.com, anandjojo@yahoo.com

Message....

I am very happy indeed to learn that the Primary Teachers Education College, Sitagarha is preparing itself to publish the Annual College Magazine **"Anmol Rishta".**

The Teachers Training College has a big responsibility to prepare the talented teachers for the school in Jharkhand and Indai at large. I believe that the future teachers would have the beautiful opportunity to express their multi-dimensional talents in the Annual Magazine.

I wish all of you a good success and God's blessings.

Yours Sincerely,

+ Anand Jojo

Most Rev. Anand Jojo

Bishop of Hazaribag

11.12.2019

HAZARIBAG PROVINCE OF THE SOCIETY OF JESUS
Arrupe Niwas, Holy Cross Marg, P.B. 6, Hazaribag: 825301, Jharkhand

It is my pleasure to write down these sentiments of appreciation and love to the management, teaching and non-teaching staff and the students as the Primary Teachers Education College is bringing out the annual magazine ***"Anmol Rishta"***. I am aware of the manifold extracurricular activities of the college and the annual magazine is one of them. It provides a podium to display the art of thinking and writing. It is also an occasion to unveil the hidden and buried talents of the students. I appreciate and encourage the students for your fervor for this great work.

Education Institutions like yours and the teachers play a powerful role in the character formation and over all development of the students. Teachers are able to show to the students what is important in life. Along with teaching, the teachers are able to create confidence, faith, honesty and trust in the students. Teaching is a very satisfying job because teaching is by itself a reward in the minds of the best teachers. It is also about helping young people to create and fulfill their dreams. To emphasize the importance of education and the role of a teacher I quote ***Kofi Annan*** who said, "Knowledge is power. Information is liberating. Education is the premise of progress, in every society, in every family." It transforms humanity. It adds color, joy, and success in life.

I acknowledge and applaud the Principal and all the staff for their commitment and generous dedication for their good care and keen interest in all round development of the students. And finally, my hearty congratulations to the Principal, all the staff and the students as you all pursue the spirit of *MAGIS* - excellence in all you do.

Yours sincerely,

Fr. Santosh Minj, SJ.
Provincial Superior 12/12/2019

Message From the Principal....

Dear staff and students,

It is my pleasure to introduce you to the fourth edition e-magazine of the PTEC ***'Anmol Rishta'***. It is also my joy to see students emerging as competent and responsible adults of the society. The PTEC various life experiences; academic as well as co-curricular activities, act as impetuses in students' growth and development.

The key focus of the present PTEC magazine ***'Anmol Rishta'*** is to gather the various life experiences of students and staff to form a college memory book. The present edition highlights the significant developmental events and incidents of the institution down the history. In addition, it also aims at providing opportunity for students to share views, ideas, and opinions on different significant facets of life in PTEC and on the perspectives of education.

PTEC, right from its beginning, categorically has aimed at the comprehensive development of the students and staff. Though the primary focus of the college has always been the intellectual rigor, yet the moral and ethical progress has been never compromised. College always strives to organize different academic as well as cultural programs, seminars, workshops and activities during the academic year so that academic and ethical standards of the students and institute are preserved.

In this present edition of the magazine, the students have attempted to put together the legacy and narratives of the college in the forms of essays, poems, paintings, drawings and activity photographs. Moreover, this edition also presents write-ups on the history of the college, new development of the college and pays special tributes to the departed JOTAS (St. Joseph's Old Trainees). In a way, the current edition tries to divulge a bridging effort between the past, the present and the future of the college. Physically, developmental pictures of the campus are the evidences of this noble effort, which demonstrate a long jump act in the history of the college.

At last, my sincere appreciations and gratitude go to all student editors and teachers for their persistent hard works in creating and publishing the current edition of the college magazine.

God Bless All!

Sincerely,

Fr. (Dr.) Vincent Hansdak, S.J.

अनमोल रत्न ....

तारीख, महीने, साल और फिर साल यूँ ही पलटते पन्नों की तरह बदल जाते हैं। एक सामान्य व्यक्ति की स्थिति ऐसी है, कि जीवन पर्यन्त सामाजिक, आर्थिक तथा पारिवारिक दायित्व को निभाते–निभाते कब उसकी कमर झुक जाती है उसे उसका एहसास भी नहीं हो पाता है। जीवन के रहस्यों की बात करे तो जो भी इस धरती पर आया है, उसे कल जाना ही है। लेकिन महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि आपने अपने पीछे किन आदर्शो को रख छोड़ा है, जिसे भावी पीढ़ी अपने जीवन में अपना सकें। जीवन की सार्थकता इस बात में है कि आप अपनी जिन्दगी को वर्षों में नहीं, पर जिन्दगी की गहराईयों में संजोएँ, जिससे आपका पूरा जीवन अनमोल रत्न के समान दमकता रहे। इस गहराई से रिश्ता तभी संभव है, जब शिक्षा ऐसी हो जो प्रत्येक नागरिक को अपने गांव, समाज और राष्ट्र के लिए कर्तव्यनिष्ठ बना सके।

पानी से आधे भरे गिलास में हम सभी की दृष्टि गिलास के सिर्फ आधे खाली भाग में ही रहती है। हम सभी का व्यक्तित्व भी ऐसा ही है। हम अपने नकारात्मकता को इतना अधिक महत्व देते है कि सकारात्मकता कहीं खो–सी जाती है। आपको ढूँढना हैए गिलास के उस भाग में जहाँ आपकी प्रतिभा उस पानी में धुली हुई है। आपकी शिक्षा सिर्फ कागजी पन्नों तक ही सीमित ना रहे। वो अंक जिसे आपने अपनी मेहनत से अर्जित किया है, उसकी महत्ता को सिद्ध करने का प्रयास करे। एक छोटे बच्वें को अक्षर ज्ञान कराने से लेकर बिस्तर पर पड़े असहाय वृद्ध की सेवा करने का ही प्रश्न क्यों न हो? आपका प्यार, स्नेह तथा समर्पण किसी के भी चेहरे में मुस्कान बिखेर सकती है। वो अजनबी मुस्कान आपके जीवन का सबसे कीमती ईनाम होगा, जिसमें कोई भी प्राइस टैग नहीं लगा होगा।

अतः यह दृढ़ निश्चय करे कि आपको सिस्टम को बदलाना नहीं है, पर उसी सिस्टम में रहकर उसमें सुधार लाना है।

मैम
डोली लकड़ा

संपादक मंडल की कलम से ....

प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गुडवा, सीतागढ़, हजारीबाग एक प्रतिष्ठित येशु समाजी संस्था है, जो 1958 ई० से अब तक अपनी पहचान शिक्षक प्रशिक्षण क्षेत्र में, एक आदर्श शिक्षक–शिक्षिका बनाने की रही है।

सच कहूँ तो एक शिक्षक, ज्ञान के प्रगति का वह समुद्र है जिसके बिना हमारा सभ्य जीवन असम्भव है। जिस तरह एक माँ अपने बच्चों को जीवन गुजारने के सही गुण सिखाती है, ठीक उसी प्रकार एक शिक्षक का हर कौशल छात्रों के साथ एक 'अनमोल रिश्ता ' होता है।

यह महाविद्यालय हम सभी प्रशिक्षणार्थिओं के परस्पर सहयोग, त्याग, सच्चाई, दया, सरल व्यवहार, सत्यनिष्ठा इत्यादि गुणों को विकसित कराती है। साथ ही हमारे जीवन के मूल्यों पर आधारित शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और चारित्रिक निर्माण पर पूर्ण सहयोग प्रदान करती है।

अनमोल रिश्ता पत्रिका का यह चतुर्थ संस्करण शिक्षा के विकास की भावना के साथ प्रशिक्षणार्थिओं के सोच को उनके रचनात्मक, सृजनात्मक, चिंतन, तर्क शक्ति, बौद्धिक क्षमता एवं अन्य कौशलों से परिचय कराता है।

महाविद्यालय के इस वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन में विशेष रूप से श्रध्देय बिशप स्वामी आनंद जोजो डी० डी०, प्रोविंशियल फा० संतोष मिंज ये० स० सेक्रेटरी फा० पी० जे० जेम्स ये० स० को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ, उनके प्यार एवं प्रोत्साहन भरे सन्देश से हमें भी प्रेरणा मिलती हैं।

अंततः मैं हमारे प्राचार्य डॉ फा विन्सेंट हांसदा ये० स०, सभी व्याख्यतागणों तथा प्रशिक्षणार्थिओं को उनके अतुलनीय व बहुमूल्य समय एवं सहयोग देने के लिए मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

मुख्य संपादक
असीम एक्का

सहायक सम्पादक
सुमेश मुण्डा, अविरा एक्का
बसंती टुटी, समीर मिंज, नेहा प्रवीन,
अलमा लकड़ा, रोबर्ट किस्पोट्टा

शिक्षक सलाहकार
मैम डोली लकड़ा, सर नीरज कुमार त्रिपाठी,
मैम तेरेसा पन्ना, मैम सुशीला एक्का
फा० भिन्सेंट हँसदा

अनुक्रमणिका

क्रम सं०	विषय	रचनाकार
1	PTEC का इतिहास	फादर श्याम किशोर टुडू
2	St. Xavier College of Education	मैम तेरेसा पन्ना
3	Motivation (प्रेरणा)	सर गाब्रियल किंडो
4	मानसिक भक्ति का व्यवहारिक प्रयोग में कमी	मैम सुशीला एक्का
5	Indian Education system Needs serious Reforms	Purushottam Kumar
6	शिक्षक का महत्व	विनय कोनगाड़ी
7	A Mother Loves	Anup Sandeep Kerketta
8	आिदत पर विचार	विमल हँसदा
9	आत्मविश्वास	अनुपम निलेष तिर्की
10	Education System	Sameer Minj
11	शिक्षक कौन?	मनोज बुढ़
12	शिक्षण अभ्यास का अनुभव	शब्बा प्रवीण
13	Never Give up	Rose Mary Hembrom
14	माता–पिता	ओम प्रकाश
15	आधुनिक नारी शिक्षा	प्रियंका टुटी
16	मूर्तिकार और पत्थर	प्रतिमा कुमारी
17	समर्पित शिक्षक	प्रेम दास

PTEC का इतिहास

सन् 1950 ई के पहले एस०एस०सी० के अहाते में कृषि प्रशिक्षण संस्थान के रूप में फा० डेमोल्डर द्वारा वर्तमान प्रशिक्षण महाविद्यालय की नींव रखी गई थी। 1955 के आते आते बिहार सरकार की नीति में बदलाव के कारण इस संस्था को निर्देश मिला कि वे इस प्रकार का प्रशिक्षण चलाए जो महात्मा गाँधी के सपनों पर आधारित शिक्षा होगी। 1958 ई० में येसु समाज के द्वारा एक अल्पसंख्यक ईसाई संस्था के रूप में स्थापित हुआ। 23 जुलाई 1958 ई० में बिहार के गवर्नर डॉ जाकिर हुसैन जो एक मूल शिक्षा पद्धति के संस्थापक थे उनके अथक प्रयास के द्वारा शिक्षा विभाग ने मान्यता दी।

15 प्रशिक्षणार्थियों के साथ शिक्षक शिक्षा संस्था जुलाई 1958 में शुरू किया गया। सन् 1960 ई० में फा० माईकल ईथर ने प्रशिक्षणार्थी, कर्मचारियों की समस्या को कल्याण विभाग तक पहुँचाया एवं महाविद्यालय में कृषि कार्य को जोर दिया। फा० समरटन ने 1967 ई० में दृढ़ संकल्क लिया और कहा कि जो भी शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे उन्हें गावों में जाकर सामाजिक चेतना के लिए काम करना है।

जनवरी सन् 1970 ई० में फा० याकुब तिर्की प्राचार्य बने और उन्होंने हॉली क्रॉस की धर्म बहनों को निमंत्रण दिया। ये धर्म बहनें अभ्यास मध्य विद्यालय में स्थानीय बच्चों को पढ़ाने का काम करती थी। इसके बाद जुलाई सन् 1974 ई० में 15 लड़कियों को भी इस महाविद्यालय में प्रशिक्षण मिलने लगा।

1991 ई० में लालू सरकार के समय शिक्षक नियुक्ति के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं थी। 1997 ई० में फा० जेवियर तिग्गा के नेतृत्व में महाविद्यालय को एन०सी०टी०ई० द्वारा मान्याता मिली एवं इसकी परीक्षा बिहार विद्यालय समिति के द्वारा ली जाने लगी। सन् 1994 ई० तक बिहार विद्यालय समिति के द्वारा परीक्षा ली जाती थी। 1991 में किसी कारणवश छात्रवृति मिलना बंद हो गया था जिसे 2006 में पुनः प्रारंभ किया गया। 2007 ई० से पहले 50 प्रशिक्षणार्थी महाविद्यालय में नामांकन पाते थे लेकिन फा० जेवियर तिग्गा के निवेदन तथा अथक परिश्रम से सन् 2007 ई० में महाविद्यालय को 100 प्रशिक्षणार्थी रखने की अनुमति दी गई। इसके बाद महाविद्यालय में हर वर्ष 60 लड़के तथा 40 लड़कियाँ नामांकन पाते थे, लेकिन 2019 से 50 लड़के और 50 लड़कियां नामांकन पाती हैं। झारखण्ड निर्माण के पश्चात् इस महाविद्यालय की परीक्षाएँ झाखण्ड अदिविद्य परिषद् द्वारा ली जाने लगी तथा इसी परिषद् ने प्रशिक्षण हेतु नये पाठयक्रम की पेशकश की।

2010 के दशक में एनसीटीई के द्वारा महाविद्यालय को निर्देश दिया गया कि प्राथमिक शिक्षक शिक्षण के साथ–साथ यह संस्था बी०एड० के कोर्स भी चलाए। इसी निर्देशन को कार्यरूप देने हेतु नए भवन की आवश्यकता महसूस की गई। प्रस्तावित भवन में अभी पी टी टी के कोर्स हो रहे हैं और निकट भविष्य में बी०एड० के कोर्स होने की संभावना है। जैसे–जैसे संसाधन एवं कोर्स की आवश्यकता महसूस की जाएगी इस भवन में शारीरिक शिक्षण शिक्षा, मोंटेसरी शिक्षण शिक्षा, पीटीटी का अंग्रेजी माध्यम का कोर्स तथ एमएड जैसे कोर्स भविष्य में चलाने की सम्भावना हैं।

यह महाविद्यालय छात्रों को विशेषकर काथलिक लड़के–लड़कियों को धार्मिक, बौद्धिक, नैतिक, शारीरिक, सांस्कृतिक एवं व्यवसायिक शिक्षा देकर उन्हें सर्वगुण संपन्न शिक्षक–शिक्षिका बनाने का उद्देश्य रखता है। वर्तमान में इस महाविद्यालय में अंग्रेजी शिक्षा के साथ–साथ तकनीकी शिक्षा पर भी विशेष जोर दिया जा रहा है। यहाँ की सहचर शिक्षा, जिसे फा० रोबर्ट सलैटरी ने शुरू किया था, शिक्षणर्थियों को एक साथ बढ़ने में मदद दे रही है। स्टाफ गाईड के निर्देश में प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न दलों में बाँटा गया है, जिसमें व्यक्तिगत और सामूहिक निर्देशन दिया जाता है।

इस महाविद्यालय का आदर्श वाक्य "पर हिताय नरः नारी "है।

फा० श्याम किशोर
टुडू ये० स०

St. Xavier College of Education

PTEC येसु संघी पुरोहितों द्वारा संचालित एक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान है येसु संघी दुनिया भर में अपनी शिक्षण नीतियों, सेवा, शैक्षणिक संस्थानों के लिए जाने जाते है अपने संस्थापक संत इग्नासियुस लोयोला से प्रेरणा पाकर एवं उनके पदचिन्हों पर चलते हुए येसु संघी धर्म बंधुओं ने Jesuit Charism का ज्वलंत उदाहरण PTEC के रूप में किया है।

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय की शुरुआत येसु समाजी पुरोहितों द्वारा सन 1958 ई० में हुई थी। पिछले छः दशकों से PTEC इस क्षेत्र में गुणवान शिक्षक–शिक्षिका तैयार करने में सतत् प्रयासरत है। 'पर हिताय नरः नारी' आदर्श वाक्य के तर्ज पर एक कर्मठ एवं योग्य शिक्षक तैयार कर लोगों तक शिक्षा की चिंगारी सुलगाने एवं सुनहरे भविष्य का निर्माण करने हेतु आगे बढ़ना इसका प्रमुख लक्ष्य है। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिए महिला एवं पुरुषों को शिक्षा के क्षेत्र में समाज के लिए तैयार करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में संस्थान के सभी शिक्षक–शिक्षिकाएँ पूरी तन्मयता के साथ जुड़ें हुए हैं।

PTEC में कुल 100 सीट हैं जिसमें महिला–पुरुष का Ratio वर्तमान में 50–50 हैं। यहाँ सभी धर्म एवं जाति के विद्यार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

अपने प्रशिक्षुओं के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न प्रकार के सहगामी क्रियाओं को द्विवर्षीय Academic calender में समावेश किया गया है।

वर्तमान परिवेश की आवश्यकता एवं समय की माँग को देखते हुए PTEC को भौतिक संरचनाओं में एवं नए बी.एड कोर्स शामिल कर Upgrade किया जा रहा है। इस उद्देश्य से दिनांक 06/12/2017 ई० को माननीय विशप स्वामी आनंद जोजो के द्वारा नए भवन की आधारशिला रखी गई थी। देखते–ही–देखते दो वर्षों में विशाल भवन बनकर तैयार हो चुका है जिसका Blessing 29/01/2020 ई० को हुआ है।

इस नए भवन में विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास के लिए विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की गई है जैसे– आधुनिक उपस्कर, विज्ञान प्रयोगशाला, पुस्तकालय, वाचनालय, कॉमन रूम, Staff रूम, Multi Purpose Hall, कंप्यूटर लैब, कार्यालय, प्रिंसिपल कार्यालय, महिला पुरुष–प्रसाधन, वाई–फाई, कक्षाओं में प्रोजेक्टर की सुविधा, CCTV इत्यादि। साथ ही साथ खेल के मैदान का नवीनीकरण एवं एक वृहत मैदान का निर्माण किया जा रहा है जिसमें हर प्रकार के Events किये जा सकें।

यह वर्ष हमारे महाविद्यालय के लिए एक महत्वपूर्ण वर्ष हैं क्योंकि हमारा महाविद्यालय परिवर्तन के युग से गुजर रहा है। छः सदियों से चले आ रहे PTEC का नाम अब St. Xavier College of Education के नाम से जाना जायेगा। न केवल नाम में परिवर्तन बल्कि बुनियादी सुविधाओं में भी वृहद् परिवर्तन देखा जायेगा।

आज हमारे प्रशिक्षणार्थी इस दौर पर पहुँच गए हैं कि वर्तमान परिवेश के अनुरूप सामाजिक एवं रचनात्मक कार्य करने में अपने आपको सक्षम बना सकें। यहाँ के प्रशिक्षणार्थी यहाँ से शिक्षा प्राप्त कर मानवीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा के प्रचार–प्रसार एवं सर्वगुण संपन्न शिक्षक बनकर लोगों तक शिक्षा की लौ प्रज्वलित कर सकें तथा भविष्य की चुनौतियों का सामना करते हुए अपने शिक्षण व्यवसाय को समर्पण की भावना से करते हुए अपने भविष्य को बेहतर बना सकें।

मैम तेरेसा पन्ना

Motivation (प्रेरणा)

उद्देश्य

- गर्व (Pride) की भावना लाना / बढ़ाना
- अपनी सोच और योजनाओं में दूसरों को भी मिलाना
- दूसरों के लिए खुद एक अच्छा उदाहरण बनना
- दूसरों के स्वाभिमान को बढ़ाने की कोशिश करना
- उत्साह बढ़ाना, बढ़ावा देना

हम देखते हैं कि ज्यादातर लोग अच्छे और भले हैं और वे बेहत्तर काम कर सकते हैं तथा दूसरे लोग जो जानते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए लेकिन वे नहीं कर रहे हैं ।

कमी है तो सिर्फ एक 'प्रेरणा' रूपी चिंगारी की।

सबसे बड़ी प्रेरणा किसी व्यक्ति के विश्वास (Belief system) से आती है। इसका मतलब है कि किसी भी काम में पूरा विश्वास करके जिम्मेदारी उठाना है। यह प्रेरणा महत्त्वपूर्ण बन जाती है, जब लोग अपने व्यवहार और कामों की जिम्मेदारी लेते हैं। ऐसा करने से जिंदगी के प्रति उनका नजरिया सही हो जाता है। घर और दफ़्तर में काम करने की उनकी काबिलियत बढ़ जाती है। उनके रिश्ते घर और दफ़्तर से बन जाते हैं । जिंदगी और भी सार्थक व भरपूर हो जाती है।

हमारा हर व्यवहार **'फायदे या नुकसान'** के उसूल से बनता है। अगर फायदे नुकसान से ज्यादा हैं तो यही प्रेरक हैं और फायदे के मुकाबले नुकसान ज्यादा है तो यही रूकावट बन जाता है।

कुछ फायदे साकार हैं और देखे जा सकते हैं, जैसे कि रूपये–पैसे, छुट्टियाँ और तोहफे। कुछ फायदे निराकार हैं जैसे कि मान्यता, तारीफ, कुछ पाने का अहसास, तरक्की, जिम्मेदारी, खुशहाली, आत्म–महत्त्व, पूर्णता और विश्वास ।

हम किसी को प्रेरित नहीं कर सकते, बल्कि अपने आप को ही प्रेरित कर सकते हैं। हम उन्हें खुद से प्रेरणा लेने के लिए प्रेरित (Inspire) कर सकते है । हम एक ऐसा असरदार महौल बना सकते हैं, जिससे कि दूसरे लोग प्रेरित हो सकें। अपने आप में अंतर्प्रेरणा (Inspiration) को महसूस कर सकें। अंतर्प्रेरणा से सोच में बदलाव आता है, जबकि प्रेरणा से काम में बदलाव आता है । उदाहरण के लिए:–

1. तीन आदमी ईंटों की चुनाई कर रहे थे। एक राहगीर ने उनसे पूछा कि क्या कर रहे हो ।

पहले आदमी ने कहा –''क्या तुम देखते नहीं कि मैं रोजी–रोटी कमा रहा हूँ ।''

दूसरे आदमी ने कहा –''क्या तुम देखते नहीं कि मैं ईंटों की चुनाई कर रहा हूँ ।''

तीसरे आदमी ने कहा–''मैं एक खूबसूरत इमारत बना रहा हूँ ।''

तीनों ही आदमी एक ही काम कर रहे थे लेकिन तीनों का काम के प्रति नजरिया बिल्कुल अलग–अलग था। **पहला आदमी** अपना दिनचर्या का कार्य कर रहा था जिससे कि उसे उस दिन के लिए कुछ खाने का जुगाड़ हो जाए । उनके कामों में न तो रचनात्मकता थी और न ही वह भविष्य के लिए चिंतित

था। वह तो उस पूरे दिन को व्यतीत करने में व्यस्त था और उतना ही परिश्रम कर रहा था जिससे कि उसके दैनिक आहार की पूर्ति हो जाए। **दूसरा आदमी** मात्र एक काम से बँधा था। केवल उसी काम को कर रहा था जिसे उसे सौंपा गया था। उसको किसी आदेश देने वाले की आवश्यकता थी। अगर आदेश मिला तो वह केवल उसी काम को केवल करेगा, उसके अलावा वह दूसरे कामों की तरफ ध्यान भी नहीं देगा । क्योंकि उसे तो केवल आदेश चाहिए। **तीसरा आदमी** काम के साथ–साथ भविष्य के बारे में भी सोच रहा है । वह आज और अभी जो कर रहा है उससे निर्मित चीज क्या होगी, उसका आकार, प्रकार क्या होगा? कैसा होगा? भविष्य के सार्थकता के प्रति वह गंभीर था। वह कल्पना को सार्थक रूप देने के लिए प्रयासरत् था। वह अपने कामों में बेहत्तर परिणाम का आवरण ढँकने का प्रयास कर रहा था।

उपरोक्त तीनों में प्रेरित कौन है? निश्चित ही तीसरा आदमी। कहने का अर्थ है कि किसी भी काम में बेहत्तरी तब आती है जब काम करने वाला उस काम को करने में गर्व महसूस करता है। इसके लिए अंतर्प्रेरणा की नितांत आवश्यकता होती है।

2. आप किसी न किसी अस्पताल का भ्रमण अवश्य किए होंगे। आपने देखा होगा कि अस्पताल में विभिन्न तरह के मरीज इलाज के लिए आते हैं, कुछ दवा लेकर चले जाते हैं और कुछ को बेहत्तर इलाज के लिए अस्पताल में ही पलंग आबंटित किया जाता है। अगर अचानक अस्पताल में आग लगने की खबर आती है तो क्या लंगड़ा व्यक्ति जो बिस्तर से उठ भी नहीं पाता है, भाग सकेगा? बीमार व्यक्ति जो कि अपने को दयनीय एवं कमजोर महसूस करता है, भागेगा या नहीं। निश्चित ही लंगड़ा भागेगा और बीमार व्यक्ति भी उठ खड़ा होगा। क्योंकि प्रत्येक को उसकी प्राण प्यारी है । उस घड़ी में उनमें भागने की वो ताकत और उठ खड़े होने की वो ताकत कहाँ से आयी ? यही प्रेरणा है।

प्रेरणा एक ऐसी चीज है जो हमारे काम और भावनाओं को प्रोत्साहित करती है। प्रेरणा बहुत शक्तिशाली है। यह हममें दृढ़ विश्वास जगाती है और हमारे विचार की गाड़ी को काम करने के लिए आगे बढ़ाती है । यह ऐसी ताकत है जो वास्तव में हम सबकी जिंदगी बदल सकती है। यह हमारे कामों और भावनाओं में जान डाल देती है ।

बाहरी प्रेरणा :– बाहरी प्रेरणा बाहरी चीजों से प्रभावित होती है जैसे – सामाजिक मान्यता, यश, डर । डर से पैदा हुई प्रेरणा के फायदे भी हैं और नुकसान भी। डर से पैदा हुई प्रेरणा के ये फायदे हैं – इससे काम जल्दी पूरा होता है, इसका असर तुरंत होता है। वक्त पर काम पूरा होने से कोई नुकसान नहीं है, कुछ समय के लिए व्यक्ति की कार्यक्षमता बढ़ जाती है । उदाहरण के लिए:–

1. ऐसा अक्सर होता है कि बाघ जब हिरण के पीछे भागता है तो ज्यादातर समय हिरण बाघ को चकमा देकर भाग निकलते हैं, ऐसा क्यों ? क्योंकि इनमें से एक तो अपनी जान के लिए भाग रहा है, दूसरा अपने खाने के लिए।
2. इतिहास हमें बताता है कि पिरामिड गुलामों से बनवाए गए थे। वे लगातार काम इसलिए करते रहे क्योंकि उन पर डंडा, कड़ी निगरानी एवं सजा का डर था। यह बाहरी प्रेरणा है – जिसका मतलब है कि प्रेरणा तब तक है जब तक कि प्रेरक है । जब प्रेरक चला जाए तो प्रेरणा भी चली जाती है।

डर से पैदा हुई प्रेरणा के नुकसान – इससे तनाव बढ़ता है, सीमित काम करते हैं जिससे जान बची रहे, कार्य–क्षमता गिर जाती है, रचनात्मकता खत्म हो जाती है, डंडे के आदि हो जाते हैं और डंडे के बगैर काम नहीं होता ।

इस तरह हम सभी सही या गलत रूप में हर क्षण प्रेरित होते रहते हैं।

हमें प्रेरित होने की जरूरत क्यों ?

प्रेरणा हमारी जिंदगी की गाड़ी को आगे बढ़ाती है। यह सफल होने की इच्छा से आती है। सफलता के बिना जीवन में कोई गर्व नहीं, कोई उत्साह नहीं, कोई आनंद नहीं – वह चाहे घर हो या दफ्तर, जिंदगी की गाड़ी एक पंक्चर पहिए की तरह हो जाती है जो झटके खाती रहती है। प्रेरणा स्नान करने के समान है। जिस प्रकार हम रोज नहाते हैं, उसी तरह हमें रोज प्रेरित होने की आवश्यकता है ।

सर
गाब्रियल किंडो

मानसिक भक्ति का व्यवहारिक प्रयोग में कमी

शिक्षा का अर्थ है सीखना और सिखाना। शिक्षा मानव को एक अच्छा इंसान बनाती है। अर्थात उनके व्यवहारिक सोच में परिवर्तन लाकर उनके जीवन को सुखमय बनाती है। शिक्षा में ज्ञान, उचित आचरण, तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समाविष्ट है। इस प्रकार कौशलों, व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक, नैतिक और सौंदर्य विषयक के उत्कर्ष पर केन्द्रित है।

अर्थात्, याददाश्त + ज्ञान + बुद्धि + रचनात्मक + कल्पनाशक्ति = मानसिक शक्तियों का विकास

एक बार सरकारी एवं गैर सरकारी संस्था से पुल निर्माण के कार्य के निरीक्षण के लिए मेरे गाँव के नदी के पास आए। निरीक्षण कर रहे लोगों को बैल हाँकने वालों ने सुझाव दिया कि यहाँ आप पुल का निर्माण न करे क्योंकि यहाँ नदी का पानी अति तीव्र गति से बहती है। आप यहाँ से 50 मीटर ऊपर या 50 मीटर नीचे पुल का निर्माण करें क्योंकि वहाँ ऊपरी भाग से चौड़ी और जहाँ पुल का निर्माण करना चाहते है वहाँ सकरा है। बरसात के दिनों में यहाँ 30 से 50 फीट तक गड्ढे हो जाते है। यदि पुल का निर्माण करोगे तो एक साल भी नहीं टिक पाएगी। अभियंताओं ने उनकी बातों को तनिक भी नहीं सुना और पुल का निर्माण कर दिया। बरसात आयी बाढ़ आया और पुल का एक खम्भा नीचे सरक गया। सोचिए उस पुल की क्या हालत होगी। अर्थात् शिक्षा में व्यवहारिक ज्ञान एंव कल्पना शक्ति की कमी।

आज हमारे देश के शिक्षण संस्थाओं में केवल याददाश्त की परीक्षा होती है। याद करो, छाप दो और अच्छे अंक लाओ इन्हीं सूत्रों को अपनाया जाता है।

इसलिए तो स्वच्छता की पढ़ाई होती है लेकिन नदी नालों में गंदगी फैलायी जाती है और तो और सड़कों के किनारे कचड़े फेंक दिए जाते हैं। ट्रैफिक नियम की पढ़ाई होती है परन्तु छुट्टी होते ही सिग्नल तोड़े जाते है। बोतल में लिखी होती है स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है लेकिन मौका मिलते ही लोग टूट पड़ते हैं।

इसलिए याददाश्त अच्छी और मजबूती के साथ–साथ हमें नैतिक शिक्षा की आवश्यकता है जिसस यवहारिक ज्ञान बढ़ सके। प्रोजेक्ट वर्क पर ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे रचनात्मक एवं कल्पना शक्ति का विकास हो सके।

थोड़ी पढ़ाई और थोड़ी व्यवहारिक सोच (ज्ञान) कर उपयोग करना चाहिए जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास के साथ–साथ उनके मानसिक शक्तियों का भी विकास हो सके।

मैम
सुशीला एक्का

INDIAN EDUCATION SYSTEM NEEDS SERIOUS REFORMS

"Education is the founding stone of a country's economy. A country that fails to provide its citizens the right to education lags behind in every way."

The history of Indian education has its roots in the ancient ages where they followed the Gurukul system. A system where the students resided in the house of their teachers until teachers felt that he had imparted all that he could. However, this system was changed during the colonial era when the British set up schools. While the ancient system included more interactions with the nature; the modern system is more class room oriented.

In 2014, India's global education ranking slipped down to 93 ranks. This, together with a series of scams faced by the Indian education sector, calls for an immediate need to bring reforms in our education system. A student in India is left with the options of choosing from science, humanities or commerce after he finishes his tenth grade. However, the trend shows that more and more students are opting to go abroad for further studies after completing their post graduation in India.

Schools play a vital role in shaping a person's social and professional growth. The conventional schools in India focus on nurturing the children to face the competitive world outside. Examinations and assignments are encouraged to assess the capability of the students. Whether a child was knowledgeable or not, depended on the marks he scored. Many activists who oppose the Indian education system today are of the opinion that the schools teach the students through rote learning and not by understanding things through application.

A typical Indian classroom is characterized by long hours of lectures by the teachers with very little focus on the students' ability to comprehend. However, Indian education system today is seeing many technology driven innovations for students.

Indian education system predominantly follows the system laid down by the British. Although we can boast of having the IIT's, IIM's and some of the best law and medical colleges but India's contribution to the world of innovation is close to none. Our education system should therefore focus on churning out not just engineers, but also entrepreneurs, artist, scientists, writers, teachers etc. who will be instrumental in the development of the economy.

Purushottam Kumar
2nd year 'A',
Session:
2018-2020]

शिक्षा की हर व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका होती है शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे व्यक्ति बड़ी से बड़ी सफलताएँ हासिल करता है और यह शिक्षा जो हमें देता है वह शिक्षक ही होता है।

शिक्षक ज्ञान, समृद्धि और प्रकाश का एक बड़ा श्रोत होता है, जिससे कोई भी व्यक्ति जीवन भर के लिए लाभ प्राप्त कर सकता है। बच्चे को प्रथम शिक्षा अपने माता–पिता तथा परिवार से मिलती है उसके बाद उसके गुरु या शिक्षक का नाम आता है।

शिक्षक तथा छात्र राष्ट्र के भविष्य होते हैं। वह शिक्षक ही होता है जो एक छात्र में अच्छा नागरिक बनने के गुणों का विकास कराता है। शिक्षक चाहे तो छात्र का भविष्य खराब कर सकता है, लेकिन एक अच्छा शिक्षक होने के नाते वह अपने छात्र के भविष्य का निर्माण करता है। वह शिक्षा द्वारा छात्र को अकादमिक रूप से बेहतरीन बनाता है और जीवन में हमेशा अच्छा करने के लिए प्रेरित करता है, प्रोत्साहित करता है। शिक्षक के बिना कोई भी अपना मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास नहीं कर सकता है।

विद्यार्थी जीवन में शिक्षक एक महत्वपूर्ण इंसान होता है जो अपने ज्ञान, धैर्य, प्यार और देखभाल से उसके पूरे जीवन को एक मजबूत आकार देता है।

अच्छा शिक्षक अपने छात्रों से मित्रतापूर्ण तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करता है। हमारे लिए शिक्षक भगवान की तरफ से एक अनमोल तोहफा है, जैसे भगवान सृष्टि के निर्माता होते है वैसे ही एक शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। शिक्षक कभी बुरे नहीं होते। ये केवल उनके पढ़ाने का तरीका होता है जो एक दूसरे से अलग होता है और विद्यार्थियों के दिमाग में उनकी छवि बनती है। अच्छा शिक्षक अपने विद्यार्थियों को खुश और सफल देखना चाहता है। अच्छा शिक्षक कभी धैर्य नहीं खोता, वह मुश्किल घड़ी में भी संयम से काम लेता है। शिक्षक भी एक इंसान है जिसके अंदर भगवान का रूप एवं सच्चे व अच्छे मार्गदर्शक के गुण निहित होते है। शिक्षक कई बार अपने बच्चों को अच्छे कार्यों के लिए पुरस्कृत भी करते है तथा उनकी गलतियों का एहसास कराने के लिए सजा भी देते है। शिक्षा जीवन में सफलता पाने की कुंजी है और शिक्षक अपने छात्रों के जीवन में चिरस्थाई प्रभाव डालते हैं। शिक्षक ज्ञान का भंडार होता है और वह हर संभव अपने छात्रों की सहायता करता है। अगर शिक्षक अपने विद्यार्थियों को यह सिखाये कि कोई काम करना मुश्किल नहीं है बल्कि उनके अंदर उस कार्य को करने की दृढ़ इच्छा शक्ति होनी चाहिए तो वे उसे जरूर पूरा कर सकते हैं। शिक्षक हमेशा अपने छात्रों के उज्जवल भविष्य की कामना करता है। वह छात्रों के अंदर ज्ञान का दिव्य प्रज्वलित कर अंधकार को दूर करता है।

अतः शिक्षक एक महान व्यक्तित्व और राष्ट्र के भविष्य का निर्माता है।?

विनय कोनगाड़ी
द्वितीय वर्ष 'अ'
सत्रः 2018–2020

The List of Principals
(1958 - 2020)

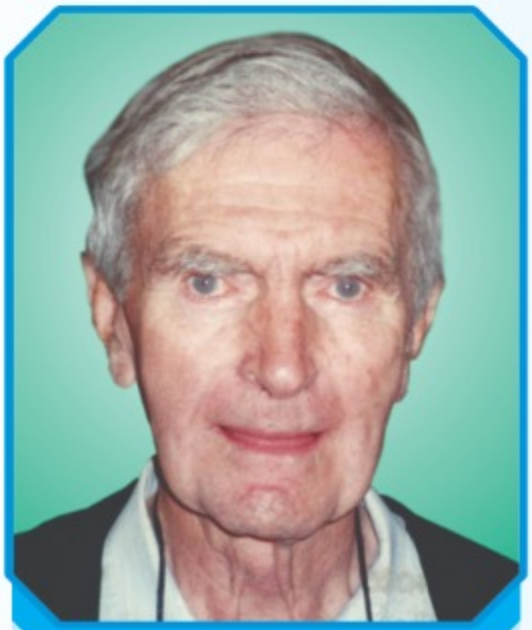

Fr. Edmond O'Connor S.J.
(Jan 1962-21.4.1962)

Fr. Oswald Summerton S.J.
22.04.1962-14.05.1963/
01.09.1965-31.12.1965/
01.01.1968-17.11.1968

Br. Brian Slack S.J.
(12 Nov 1970 - 19 Jan 1971)

Fr. Paul Horan S.J.
(13 Sep 1980 - 29 June 1981)

Fr. Paul Horan S.J.
(13 Sep 1980 - 29 June 1981)

Br. Yacub Tirkey S.J.
20 Jan 1971 - 31 Dec 1973 /
May 1984 - 17 May 1990

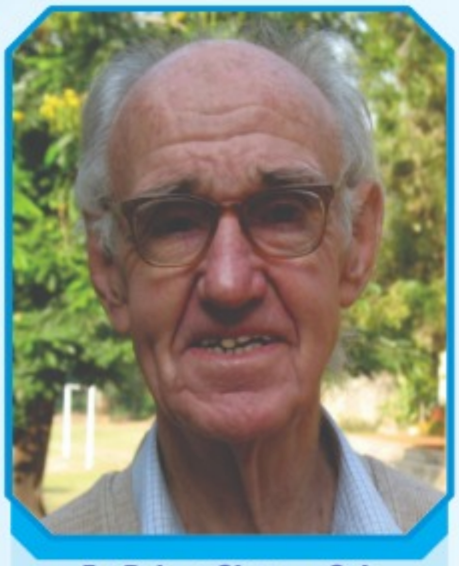

Fr. Robert Slattery S.J.
(18 May 1990 - 10 Feb 1993)

Fr. Thomas Joseph S.J.
(11 Feb 1993 - 11 Jan 1995)

Fr. Xavier Tigga S.J.
(12.06.1995 - 31.12.2017)

Mrs. Monica Kujur
(1 Jan 2008 - 31 May 2013)

Dr. Fr. S. Jayaraj Maria Louis S.J.
(11.01.2013 - 31.05.2014)

Mr. Gulab Lakra
1 June 2014 ....

Fr. (Dr.) Vincent Hansdark, S.J.
1 June 2018 ....

A MOTHER LOVES

A mother loves right from the start.
She holds her baby close to her heart.
The bond that grouts will never falter.
Her love is so strong it will never alter.

A mother gives never ending love.
She never feels that she has given enough.
For you she will always do her best.
Constantly working, there's no time to rest.

A mother is there when things go wrong.
A hug and a kiss to help us along.
Always there when we need her near.
Gently wipes our eyes when we shed a tear.

So on this day shower your mother with love.
Gifts and presents are nice but that is not enough.
Give your mother a day to have some peace of mind.
Be gentle, be good, be helpful, be kind, to your mother
and be happy to have a lovely mother.

Anup sandeep kerketta
Second year 'B'
Session
(2018-2020)

आदत पर विचार

बुरी आदतें या बुरी लत एक इंसान का पूरा जीवन बर्बाद कर देती है। किसी को जुआ खेलने की बुरी आदत होती है तो किसी को नशीले पदार्थ या गुटखा तंबाकू लेने की बुरी आदत होती है। यह बुरी आदत दूसरों के सामने उनकी इमेज खराब तो करती ही है साथ में उस इंसान का कीमती समय, पैसा आदि भी बर्बाद कर देती है।

आदत पर निम्नलिखित विचारें याद रखें :–

1. बुरी आदत इंसान की सबसे बडी दुश्मन होती है।
2. अगर आप बुरी संगति में है तो सावधान रहें क्योंकि यह आपके जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है।
3. दुश्मन तो सिर्फ एक बार दुश्मनी निकालता है लेकिन बुरी आदतें जीवन भर आपके लिए दुखदाई होती है।
4. एक अच्छी आदत इंसान को सफलता की बुलंदियों तक पहुंचा देती है वही बुरी आदत इंसान का विनाश कर देती है।
5. एक सफल और असफल इंसान मे आदतों का ही अंतर होता है।
6. किसी इंसान के पास कितना भी कुछ क्यों ना हो लेकिन अगर उसकी कोई बुरी आदत है, तो जल्द ही वह उसको बर्बाद कर देती है।

7 सफल इंसान में अच्छी आदतें होती है वही असफल इंसान बुरी आदतों का शिकार होता है।

8. एक इंसान अपने आपको श्रेष्ठ बताकर अपने दुश्मनों से लड़ लेता है लेकिन बुरी आदत रूपी दुश्मन से जब दूर रहने की बात आती है तो वह इंसान पीछे हट जाता है।
9. अगर आप में दुश्मनों से जीतने की क्षमता है तो आप अपने बुरी आदत रूपी दुश्मन से जीतकर दिखाइए।
10. अगर कोई व्यक्ति अपनी बुरी आदत को छोड़ता है तो उसका आत्मविश्वास प्रतीत होता हैं।
11. एक व्यक्ति की बुरी आदत उसके लिए सबसे बड़ा खतरा होता है।
12. अगर बुरी आदतों को एक ही बार में छोड़ेंगे तो यह आपके लिए थोड़ी मुश्किल होगी अतः आप धीरे – धीरे अपनी बुरी आदत को छोड़ने की कोशिश करें।

विमल हँसदा
द्वितीय वर्ष
'V', सत्रः
.2018–2020

नामुमकिन नहीं कुछ भी,
इस पूरे संसार में।
जो चाहे वो कर सकता,
अगर आत्मविश्वास हो इंसान में।

पहाड़ तोड़ रास्ता बना दे,
मरुस्थल में पेड़ उगा दे,
मिट्टी को सोना बना दे,
चाँद पर घर बसा दे,
अगर आत्मविश्वास हो इंसान में।

जिंदगी के सफर में,
बहुत मुश्किलें आते है।
आत्मविश्वास हो जिसमें,
वही मंजिल पाते है।।
खुद पर न हो विश्वास तो,
दुनिया क्या तुझ पर विश्वास करेगा।
दुनिया क्या तुझ पर विश्वास करेगा।
मन में हो जज्बा तो,
ईश्वर भी साथ तुम्हारे रहेगा।।

हार न माननेवालों को,
पर्वत भी शीश झुकता है।
आत्मविश्वास हो जिसमें,
वही आगे बढ़ पाता है।।

अनुपम निलेश तिर्की
द्वितीय वर्ष 'अ'
सत्रः– 2018–2020

EDUCATION SYSTEM

Education gives us the knowledge of the world around us. Education is not just about lessons in textbooks; it is about the lessons of life. Education is the most important element in the evaluation of the nation, without education we will not be able to explore the new ideas; it means we will not be able to develop the country, because without idea there is no creativity and without creativity there is no development. Education is the tool which provides required knowledge, skill, technique and information and enables us to know our rights and duties towards our family, society and obviously towards the nation. Education develops the capabilities to fight the injustice, violence, corruption and other factors. Education develops the status of the nation.

But, our education system is such that rich students get more and more education and poor do not. Nowadays, education has become very costly; as a result poor parents of the most talented students cannot even think of getting their children admitted into good institutions.

We need a system that will provide equal opportunity to both rich and poor students, so that all contribute to the development of the country. Education is the powerful tool by which we can eradicate poverty and make every person in the country successful.

If education is so important then who is responsible for the education of all? Our - constitution gives us education as our fundamental right, right to education, irrespective of class, gender and status. Different governments have brought out various education policies to provide

better education.For example:- "Sarwa Siksha Abhiyan," "Sab Padhe Sab Badhe" " Mid day meal," "Book Distribution," "Cycle Distribution" etc, To some extent, the implementation of these plans have succeeded but there is still a lot to be done.

There are some wrong steps taken which act against the principle of "Sab Padhe Sab Badhe", one of them is the cut in the budget for higher education. Government has reduced the budget for public funded institutions. We know, when the budget is cut, it affects the most to the students and parents who are poor financially. Sometimes these force us to think that the government is against the higher education of the poor people. It seems necessary therefore, to make a refined education system which aims at equal opportunity of education to all. Only then we can lead the country towards the development and then claim to be the largest democracy in the world.

"If there is one person= one vote=one value," then why not one nation and one education system."

Sameer Minj
1st Year
Section 'A',
Session
2019-2021]

शिक्षक कौन?

जीवन मे जो राह दिखाए
सही तरह चलना सिखाए
माता–पिता से पहले आता
जीवन में सदा आदर पाता।

सबको मान प्रतिष्ठा जिससे
सीखी कर्तव्यनिष्ठा जिससे
कभी रहा न दूर मैं जिससे
वह मेरा पथदर्शक है जो
मेरे मन को भाता
वह मेरा शिक्षक कहलाता।।

कभी है शांत कभी है धीर
स्वभाव मे सदा गंभीर
मन में भी रहे ये इच्द्दा
काश मैं उस जैसा बन पाता
जो मेरा शिक्षक कहलाता।।।

मनोज बुढ़
द्वितीय वर्ष 'ब'
सत्रः .
2018–2020)

शिक्षण अभ्यास का अनुभव

शिक्षण अभ्यास के लिए मुझे संत इलिजाबेथ बालिका विद्यालय में भेजा गया। मैं अपने सहपाठियों के साथ उस विद्यालय में गई। पहले दिन जब मैं विद्यालय में गई तो वहाँ की प्राचार्य ने हम सभी को अपना–अपना परिचय छात्रों के सामने देने को कहा। यह मुझे बहुत ही अच्छा लगा। वहाँ के बच्चे बहुत ही अच्छे थे। जब हम पढ़ाने के लिए जाते थे तो वे शांत रहकर हमारी बातों को सुनते थे और हमारा पूरा सहयोग करते थे। हम सभी ने मिलकर वहाँ साफ–सफाई भी किए और बच्चों से भी करवाए। जब मैं पहली कक्षा में बच्चों को action song सिखाने के लिए जाती थी तो बहुत ही अच्छा लगता था। कुछ–कुछ बच्चे बदमाशी करते थे लेकिन सभी अच्छी तरह मेरी बातों को सुनते थे और नाचते थे। मुझे उन सभी के साथ नाचने में बहुत ही मजा आता था। मैं जो कुछ भी सिखाती वे रूचि ले कर सीखते थे।

जब मैं चौथी कक्षा में बच्चों को विज्ञान पढ़ाने जाती थी तो वे ध्यानपूर्वक मेरी बातों को सुनते थे लेकिन कभी–कभी कुछ बालिकाएँ कक्षा में बहुत ही ज्यादा बदमाशी करती थी जिसके वजह से पूरा क्लाश का महौल बदल जाता था। मैं उन्हें कभी–कभी डांटती भी थी। मुझे ज्यादा विषय पढ़ाने के लिए नहीं मिला था, केवल 5वीं कक्षा में हिन्दी, चौथी कक्षा में विज्ञान, तीसरी कक्षा में नीति शिक्षा, गेम, लाइब्रेरी और English Grammar ये सभी विषयों को मैंने अच्छी तरह पढ़ाने की पूरी कोशिश की ताकि बच्चे कुछ अच्छा और ज्यादा सीखे। संत इलिजाबेथ की सारी शिक्षिकाएँ बहुत ही अच्छी थीं वे हर समय हमारी मदद करती थीं। अगर बच्चे ज्यादा बदमाशी करते थे तो वे उन्हें आकर डाँटती भी थीं। वे हर तरह से हमारी मदद करते थे। शनिवार को हम सभी बच्चों के साथ मिलकर खेलते थे, बहुत ही मजा आता था। हमने सभी बच्चों को खो–खो खेलना भी सिखाया और खो–खो का मैदान भी तैयार किया।

शिक्षण अभ्यास का मेरा अनुभव काफी अच्छा रहा क्योंकि मैं अपने विषयों को अच्छी तरह से पढ़ा पाई और बच्चों को अच्छी तरह समझा पाई। मुझे शिक्षण अभ्यास में बच्चों से और वहाँ के शिक्षकों से बहुत कुछ सीखने को मिला। मुझे अपने सहपाठियों से भी कुछ सीखने को मिला। जब भी किसी को परेशानी होती थी हम सभी मिलकर एक–दूसरे की मदद करते थे। वहाँ की षिक्षिकाएँ बहुत अच्छी थीं, वे हर समय हमारी मदद और मार्गदर्शन भी करती थी। मुझे उन सभी के साथ रहकर बहुत अच्छा लगा। यह शिक्षण अभ्यास मेरे लिए यादगार रहेगा।

शब्बा प्रवीण
द्वितीय वर्ष 'ब'
सत्रः
2018–2020)

"Success always hugs you in life but failure always slaps you in your public life"

In life, what matters is our attitude. If we give up easily, we cannot taste the sweetness of success. The path to success can be difficult, rough or hard but if we keep on going without any lack of confidence the way to success is not really away.

The only thing that helps us to achieve is, self confidence, if we believe that we can make wonders. When life gives us 1000 reasons to quit trying, no matter how talented we are, our efforts will always help us to be more successful. As we walk through life we may fall down many times. We will fail and we will make mistakes, but that's okay. Instead of waiting and looking back all time at what were lost, we must think that life is not meant to be travelled backwards.

Those who try to do something and fail are infinitely better than those who try to do nothing and succeed. "Failure is not the end but just a stream changing direction before it finally reaches the ocean."

"The struggle we have today is to develop the strength we need for tomorrow, lets never give up."

Rose Mary Hembrom
1st Year 'B'
Session:
(2019-2021)

STUDENT BATCH 2012-2021

Session (2014-2016)
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय
गुड़वा, सीतागढ़, हजारीबाग

Session (2015-2017)

Session (2016-2018)
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय

Session (2017-2019)
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय

माता–पिता

भूलो सभी को मगर,
माँ–बाप को भूलना नहीं ।
उपकार अनगिनत है उनके,
इस बात को भूलना नहीं ।
पत्थर पूजे कई तुम्हारे ,
जन्म के खातिर अरे ।
पत्थर बन माँ–बाप का,
दिल कभी कुचलना नहीं ।
मुख का निवाला दे अरे ,
जिसने तुम्हें बड़ा किया ।
अमृत पिलाया तुमको ,
जहर उनके लिए उगलना नहीं ।
लाखों कमाते हो भले,
माँ–बाप से ज्यादा नहीं ।
सेवा बिना सब राख है,
इस बात को भूलना नहीं ।
संतान से सेवा चाहो ,
संतान बन सेवा करो ।
जैसे करनी वैसे भरनी,
न्याय यह भूलना नहीं ।
सोकर स्वयं गीले में ,
सुलाया तुम्हें सूखे में ।
माँ की अभीमय आँखों को,
भूलकर कभी भिगोना नहीं ।
धन तो मिल जाएगा,
मगर माँ–बाप क्या मिल पायेंगे ?
पल – पल पावन उन चरण की,
चाह कभी भूलना नहीं ।

ओम प्रकाश
द्वितीय वर्ष 'ब'
सत्रः
2018–2020)

ए मेरे देश की नारी
तू क्यू है इतनी बेचारी
तेरी शक्ति तेरी भक्ति
तू है दुर्गा तू है काली

आज के युग में देखा जाए तो नारी हर परिस्थितियों में अपने आप पर दृढ विश्वास रखते हुए कठिनाईयों का सामना करती है। जिस प्रकार हमारे देश की आजादी के समय हमारी भारतीय महिला रानी लक्ष्मी बाई ने, पुरुषों की भाँति आपनी जान की परवाह किये बिना देश के लिए महा योगदान दी, उसी तरह बहुत सी नारियों ने आजादी में अपना योगदान दिया । देखा जाए तो आज की नारी शिक्षा और पहले की नारी–शिक्षा मे आसमान–जमीन का फर्क है। पहले नारियों को चार दीवारों के अदर रखा जाता था जिसके कारण ज्यादा शिक्षित नहीं होने के बावजूद उन्होंने अपने देश की आजादी के लिए दिल पर पत्थर रख कर योगदान दी। आज की नारियाँ स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में जाकर शिक्षा ग्रहण कर रही है। अधिक से अधिक शिक्षित होने के लिए सरकार के द्वारा छात्रवृति, पुस्तक, ड्रेस दिया जा रहा है। आज की नारी, शिक्षित होकर हर सेवा कार्य मे कार्यरत है, जैसे – पुलिस ऑफिसर, रेलवे, पायलट, बैंकिंग, राजनीति, शिक्षक इत्यादि। महिलाओ मे इसी परिवर्तन को देखते हुए कहा गया है –

नारी हमारे समाज का आधार स्तंभ है। नारी को माँ, बहन, पत्नी के रूप में देखा जाता है। तथा नारी माँ दुर्गा, माँ काली का भी रूप है। अब नारी के साथ अत्यचार नहीं क्योंकि आज की शिक्षित नारी अत्यचार नहीं सहेगी।

सहमी सहमी भोर नहीं हूँ
कोमल कच्ची डोर नहीं हूँ
आप लागों से डर जाऊँगी
इतनी भी कमजोर नहीं हूँ।

प्रियंका टुटी
प्रथम वर्ष 'ब'
सत्रः
2019–2021)

मूर्तिकार और पत्थर

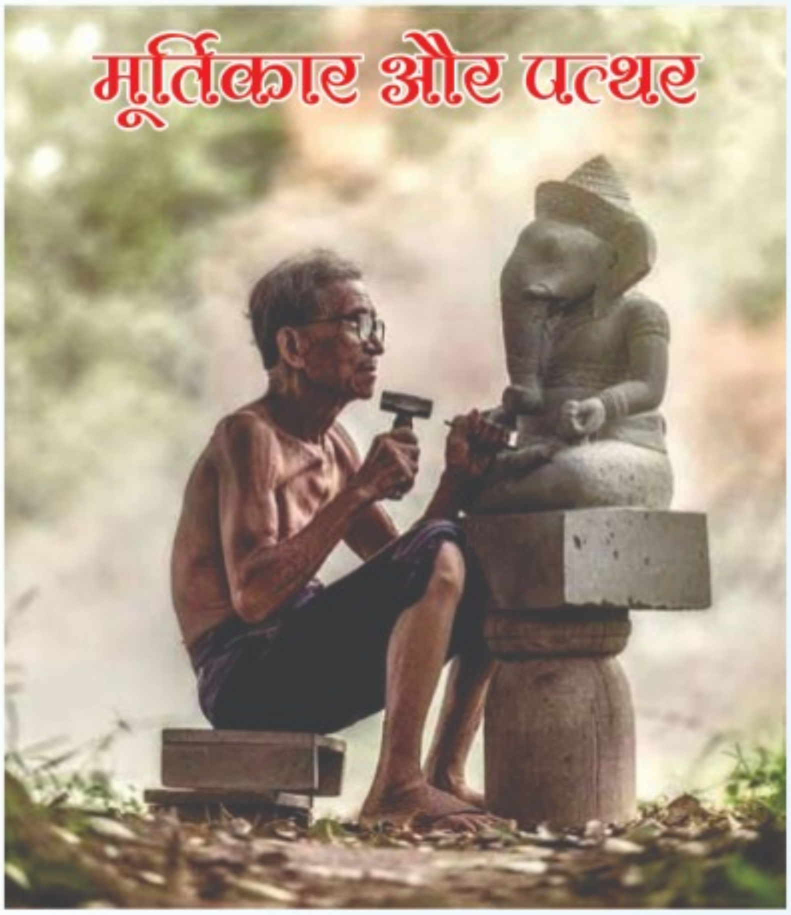

एक बार एक मूर्तिकार एक पत्थर को छेनी और हथौड़ी से काटकर मूर्ति का रूप दे रहा था। जब पत्थर काटा जा रहा था तो उसको बहुत दर्द हो रहा था।

कुछ देर तो पत्थर ने बर्दाश्त किया पर वह नाराज होते हुए बोला बस! अब और नहीं सहा जाता छोड़ दो मुझे मैं तुम्हारे वार को अब नहीं सह सकता। चले जाओं यहाँ से ।

मूर्तिकार ने समझाया अधीर मत हो। मैं तुम्हें भगवान की सूरत के रूप में तराष रहा हूँ। अगर तुम कुछ दिनों तक बर्दाश्त कर लोगे तो जीवन भर लोग तुम्हे पूजेंगे । दूर –दूर से लोग तुम्हारे दर्शन करने आयेंगे । दिन–रात पूजारी तुम्हारे देखभाल में लगे रहेंगे । और ऐसा कहकर उसने अपने औजार उठाये ही थे कि पत्थर क्रोधित होते हुए बोला, ''मुझे मेरी जिन्दगी खुद जीने दो। मैं जानता हूँ मेरे लिए क्या अच्छा है क्या बुरा मैं अराम से यहाँ पड़ा हूँ। चले जाओ मैं अब जरा सा भी तकलीफ नहीं सह सकता।

मूर्तिकार बोला– मैं जानता हूँ तुम्हें दर्द हो रहा है। पर अगर आज तुम अपना आराम देखोगे तो कल को पछताओगे मैं तुम्हारे गुणों को देख सकता हूँ। तुम्हारे अन्दर अपार संभावनाएँ है। यू यहीं पड़े–पड़े अपना जीवन बर्बाद मत करो। मुर्तिकार ने समझाया पर पत्थर को उसकी बातों का कोई असर नहीं हुआ। वह अपनी ही बात पर अडिग रहा।

मूर्तिकार पत्थर को वही छोड़ आगे बढ़ा। सामने ही उसे दूसरा एक अच्छा पत्थर दिखाई दिया। उसे उठाया और उसकी मूर्ति बना दी। दूसरे पत्थर ने दर्द बर्दाश्त कर लिया। लोग उसे रोज फूल माला चढ़ाने लगे, दूर–दूर से लोग उसके दर्शन करने आने लगे।

फिर एक दिन एक और पत्थर उस मंदिर में लाया गया और उसे एक कोने में रख दिया गया। उसे नारियल फोड़ने के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा। वह कोई और नहीं बल्कि वही पत्थर था जिसने मूर्तिकार को उसे छूने से मना कर दिया था। वह अब मन ही मन पछता रहा था कि काश उसने उसी वक्त दर्द सह लिया होता तो आज समाज में उसकी भी पूजा होती, सम्मान होता, कुछ दिनों की वह पीड़ा इस जीवन भर के कष्ट से बचा लेती।

प्रतिमा कुमारी
द्वितीय वर्ष 'अ'
सत्र :
(2018–2020)